शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को मूल्यांकन की आवश्यकता एवं उद्देश्यों से अवगत कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन विधाओं से अवगत कराना।
- बच्चों के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में प्रशिक्षित करना।
- कमजोर छात्रों की प्रगति हेतु निदानात्मक शिक्षण विधि के प्रयोग में प्रशिक्षित करना।
- प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के निराकरण करने हेतु क्रियात्मक शोध की जानकारी देना।
- शिक्षा में नवाचार की अवधारणा से परिचित कराना।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व, मूल्यांकन के पक्ष, मूल्यांकन के प्रकार, उत्तम परीक्षण, मूल्यांकन की विशेषताएं, शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना।
- प्रश्न पत्र निर्माण प्रक्रिया, मूल्यांकन का अभिलेखीकरण, निदानात्मक शिक्षण की जानकारी द्वारा प्रशिक्षुओं को शिक्षण कार्य में इनका प्रयोग करने में समर्थ बनाना।
- शिक्षण कार्य में क्रियात्मक शोध एवं शैक्षिक नवाचार करने हेतु प्रोत्साहित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया / विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

सैद्धान्तिक विषय–edu 05

शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

कक्षा षिक्षणः विषयवस्तु

1. मापन एवं मूल्यांकन

- शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन की अवधारणा।
  - शैक्षिक मापन का अर्थ
  - मूल्यांकन की संकल्पना
  - मूल्यांकन के उद्देश्य
  - मूल्यांकन के क्षेत्र
- मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व।
  - मूल्यांकन की प्रशासनिक आवश्यकता
  - मूल्यांकन की शैक्षिक आवश्यकता
  - मूल्यांकन की शैक्षिक अनुसंधान में आवश्यकता
  - सामाजिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन की आवश्यकता
- मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर।
  - परीक्षण एवं मापन में अन्तर
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व।
  - दक्षता आधारित मूल्यांकन
  - व्यापक मूल्यांकन
  - सतत् मूल्यांकन एवं महत्व
  - सतत् मूल्यांकन की कार्य–प्रणाली एवं सोपान
  - सतत् मूल्यांकन का क्षेत्र।
  - सतत् मूल्यांकन की कार्य–प्रणाली एवं सोपान
- मूल्यांकन के पक्ष।

➔ संज्ञानात्मक (Cognitive)	ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग या व्यवहारिकता, विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन।
➔ भावात्मक (affective)	ग्रहण करना या ध्यान देना, अनुक्रिया करना, मूल्य आंकना, संगठन, मूल्य द्वारा विशिष्टीकरण
➔ कौशलात्मक(Conative) एवं व्यवहारात्मक(Behavior overall activity)	सामाजिक कौशल यान्त्रिक कौशल गणितीय कौशल भाषायी कौशल

- उत्तेजना
- क्रियान्वयन
- नियंत्रण।
- समायोजन
- स्वाभावीकरण

- मूल्यांकन के प्रकार–
  - ➔ मौखिक परीक्षा
  - ➔ लिखित परीक्षा
  - ➔ साक्षात्कार / निरीक्षण / अवलोकन / प्रायोगिक
  - ➔ रचनात्मक मूल्यांकन (Formulative Evaluation)
  - ➔ आंकलित मूल्यांकन (Summative Evaluation)
- उत्तम परीक्षण / मूल्यांकन की विशेषताएं, शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन का संबंध।
- प्रश्न–पत्र निर्माण प्रक्रिया
  - ➔ योजना निर्माण, ब्लूप्रिन्ट, सम्पादन तथा अंक निर्धारण।
  - ➔ प्रश्नों के प्रकार (वस्तुनिष्ठ, अतिलघुउत्तरीय, लघुत्तरीय, दीर्घउत्तरीय)
  - ➔ शैक्षिक उद्देश्यों के अनुसार प्रश्नों के पक्ष (ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग, कौशल)
- मूल्यांकन अभिलेखीकरण (संज्ञानात्मक तथा संज्ञान सहगामी पक्ष) सतत्, मासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक मूल्यांकन, पुनर्बलन।
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण।
- क्रियात्मक शोध।
  - शोध का अर्थ, प्रकार, उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व।
  - क्रियात्मक शोध के क्षेत्र।
  - क्रियात्मक शोध के चरण एवं प्रारूप निर्माण।
  - क्रियात्मक शोध उपकरण निर्माण।
  - क्रियात्मक शोध का सम्पादन / अभिलेखीकरण।
- शैक्षिक नवाचार
  - शिक्षा में नवाचार का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व।
  - शैक्षिक नवाचार के क्षेत्र (शिक्षण अधिगम के सुधार हेतु स्थानीय समुदाय / परिवेश के संसाधनों की पहचान और उनका उपयोग कर मूल्यांकन, प्रार्थना स्थल की गतिविधि, पाठ्य सहगामी, क्रियाकलाप, सामुदायिक सहभागिता, विद्यालय प्रबंधन, विषयगत कक्षा–शिक्षण समसामयिक दृष्टान्त, लैबएरिया।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- प्रोजेक्ट कार्य के रूप में प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी द्वारा कम से कम दस बच्चों को चिन्हित कर इन्टर्नशिप के दौरान उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करना और आए हुए परिवर्तन का मूल्यांकन करना।
- प्रत्येक प्रशिक्षु दो शैक्षिक समस्याओं को चिन्हित कर उसका समाधान क्रियात्मक शोध अध्ययन के अनुसार आख्या सहित प्रस्तुत करें।
- मूल्यांकन एवं शिक्षण–अधिगम को मॉडल/चार्ट में प्रस्तुत करना।
- मूल्यांकन को प्रभावित करने वाले कारकों पर चार्ट/मॉडल तैयार करना।
- मापन एवं मूल्यांकन, परीक्षण एवं मापन में अन्तर स्पष्ट करने के लिए सामग्री/मॉडल/चार्ट तैयार करना।

समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, निदेर्शन एवं परामर्श

उद्देश्य

- प्रशिक्षुओं में समावेशी शिक्षा की समझ विकसित करना।
- समावेशी शिक्षा के प्रकार, प्रकृति एवं विविधा की जानकारी देना।
- विभिन्न प्रकार के बच्चों की शैक्षिक/भाषायी/प्राकृतिक समस्याओं से परिचित कराना।
- प्रशिक्षु को समस्त प्रकार के बच्चों की शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने, उनकी झिझक समाप्त करने में प्रशिक्षित करना।
- विषिष्ट आवष्यकता वाले बच्चों की शिक्षण की विधाओं, संचार माध्यमों का प्रयोग एवं मूल्यांकन की विधियों से परिचित होकर कक्षा शिक्षण में उनका प्रयोग कर सकने में सक्षम बनाना।
- निर्देषन एवं परामर्ष का अर्थ, महत्व एवं प्रक्रिया से अवगत करना।
- परामर्ष में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाओं से परिचित करना।
- विशिष्ट बच्चों को शिक्षा से जोड़ने की सामग्री/आई0सी0टी0 पर आधारित सामग्री/गेम के प्रयोग में प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

सैद्धान्तिक विषय–edu 06

समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श

कक्षा षिक्षणः विषयवस्तु

1. **खण्ड 'अ' – विषिष्ट आवष्यकता वाले बच्चे**

- शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय, पहचान, प्रकार, निराकरण। यथाः अपवंचित वर्ग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, लिंग, शारीरिक दक्षता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं वाक्/अस्थिबाधित), मानसिक दक्षता।
- समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी0एल0एम0 एवं अभिवृत्तियाँ (attitude)।
- समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी
- समावेशित बच्चों के लिए विषेष षिक्षण विधियाँ। यथा–ब्रेललिपि आदि।

2. **खण्ड 'ब' – निर्देषन एवं परामर्ष**

- समावेशी बच्चों हेतु निर्देषन एवं परामर्ष : अर्थ, उद्देष्य, प्रकार, विधियाँ, आवष्यकता एवं क्षेत्र (scope)
- परामर्ष में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ
    - मनोविज्ञानषाला, उ0प्र0, इलाहाबाद
    - मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र (मण्डल स्तर पर)
    - जिला चिकित्सालय
    - जिला षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान में प्रषिक्षत डायट मेण्टर
    - पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तन्त्र
    - समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ
    - सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन
- बाल–अधिगम में निर्देषन एवं परामर्ष का महत्व

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, निदेर्शन एवं परामर्श के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- अपने आस–पास के समावेशित बच्चों की समस्या पता करके उनकी सूची बनाइए।
- विभिन्न प्रकार के समावेशित बच्चों की प्रकृति को चार्ट/मॉडल द्वारा प्रस्तुत करना।
- विभिन्न प्रकार के समावेशन पर एक चार्ट/मॉडल तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के कैलिपर्स का एलबम बनाना।
- कम बोलने वाले बच्चों के लिए ऑडियो/वीडियो क्लिप तैयार करना।

आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन–लेखन तथा संख्यापूर्व क्षमताओं का विकास

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को भाषागत दक्षताओं सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना आदि का विकास करने हेतु तैयार करना।
- ध्वनियों के पारस्परिक अन्तर को समझने एवं शुद्ध उच्चारण कराने की क्षमता का विकास करना।
- भावाभिव्यक्ति की क्षमता के विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों को कराने की दक्षता का विकास करना।
- प्रशिक्षुओं को परस्पर संवाद, सरल वाक्य रचना करने की क्षमता का विकास करने हेतु गतिविधियों के आयोजन में दक्ष करना।
- प्रशिक्षुओं को गणित में संख्यापूर्व अभ्यासों के चयन एवं प्रयोग में दक्ष करना।
- प्रशिक्षु को भाषा एवं गणित विषय में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कराने में प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया / विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।